डॉ राजीव कुमार,

इतिहास विभाग,

एच.डी. जैन कॉलेज, आरा

----------+----------

गुर्जर प्रतिहार वंश का राजनीतिक इतिहास

गुर्जर-प्रतिहार वंश भारत के प्राचीन मध्यकालीन इतिहास का एक महत्वपूर्ण राजवंश था। यह वंश 8वीं से 11वीं शताब्दी तक उत्तर भारत में अत्यंत प्रभावशाली रहा था। इस वंश का उदय गुर्जर प्रदेश अर्थात आज के राजस्थान और गुजरात के क्षेत्र में हुआ था।

* उद्भव और प्रारंभिक शासक :

गुर्जर-प्रतिहार वंश की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों में मतभेद रहे हैं, किंतु यह निश्चित है कि इस वंश का संबंध गुर्जर जाति से ही था।

* इस वंश के पहले प्रसिद्ध शासक नागभट्ट प्रथम थे, जिन्होंने लगभग 730 ई. से 756 ई. तक शासन किया था ।

* गुर्जर - प्रतिहरों ने अरब आक्रमणकारियों विशेष कर मोहम्मद बिन कासिम के उत्तराधिकारी दलों को पश्चिमी भारत से खदेड दिया था।

* नागभट्ट प्रथम ने अपनी राजधानी "अवंतिका" (उज्जैन) में स्थापित की थी।

* नागभट्ट प्रथम के बाद उनके उत्तराधिकारी "वत्सराज" ने सत्ता संभाली थी, जिन्होंने 775 से 805 ई. तक शासन किया था।

* नागभट्ट प्रथम ने कन्नौज पर अधिकार करने का प्रयास किया।

* उस समय भारत की तीन प्रमुख शक्तियां -

प्रथम, गुर्जर प्रतिहार वंश, जो पश्चिमी भारत में थे। दूसरा, पाल वंश जो पूर्वी भारत में थे और तीसरा, राष्ट्रकूट वंश जो दक्षिण भारत में थे। ये तीनों शक्तियां कन्नौज पर अधिकार करने के लिए संघर्ष कर रही थीं।

* इन तीन पक्षों के संघर्ष को इतिहास में

"त्रिपक्षीय संघर्ष" (Tripartite struggle) कहा जाता है।

* गुर्जर-प्रतिहार वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक "मिहिर भोज" को माना जाता है।

* मिहिर भोज को प्रतिहार वंश का सबसे महान शासक मानने के कई कारण हैं। उन्होंने अपनी राजधानी कन्नौज में स्थापित की और पूरे उत्तर भारत पर नियंत्रण कायम किया।

* उन्होंने स्वयं को "आदि वराह" अर्थात भगवान विष्णु का अवतार घोषित किया।

* उनके समय में प्रतिहार शासन की सीमाएं पश्चिम में सिंध से लेकर पूर्व में बंगाल की सीमा तक और दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैली हुई थी।

संस्कृति और प्रशासन के क्षेत्र में योगदान :

---

* प्रतिहार शासको ने कला, स्थापत्य कला और शिक्षा को अत्यधिक बढ़ावा दिया था।

* मिहिर भोज और उनके उत्तराधिकारियों के समय में कन्नौज शिक्षा और संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र बन गया था।

* उनकी प्रशासनिक व्यवस्था गुप्त काल की तरह संगठित थी। राजा सर्वोच्च था, परंतु वह मंत्रिपरिषद की सलाह से ही कार्य करता था।

पतन का काल :

---

* दसवीं शताब्दी के पश्चात प्रतिहार शक्ति कमजोर पड़ने लगी थी।

* महेंद्र पाल प्रथम और महिपाल के बाद साम्राज्य छोटे-छोटे राज्यों में बट गया था।

* अंततः 11वीं शताब्दी में राज्य का पतन हो गया और कन्नौज पर चंदेल, परमार और बाद में गजनी सेनाओं का अधिकार कायम हो गया।

महत्व :

---

1. उनके शासन काल का महत्व इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि गुर्जर प्रतिहरों ने अरब आक्रमणों से भारत की रक्षा की थी।

2. गुर्जर- प्रतिहरों ने उत्तर भारत में राजनीतिक एकता स्थापित की।

3. गुर्जरों के शासनकाल के दौरान भारतीय संस्कृति, भाषा और धर्म का पुनर्जागरण हुआ।

निष्कर्ष :

---

* गुर्जर-प्रतिहार वंश भारतीय इतिहास में एक महान शक्ति के रूप में जाना जाता है। जिसने लगभग तीन शताब्दियों तक उत्तर भारत की राजनीति को नियंत्रित किया और भारत की सीमाओं की रक्षा की। इस दृष्टिकोण से यह मध्यकालीन भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।